खण्ड-7, अंक-1, वर्ष-2019, मु0प्र0 33-36
D.O.I.: 10.22445/avsp.v7i1.5

शोध पत्र

राजस्थान में विशाल आकार के वृक्षों, झाड़ियों एवं काष्ठ लताओं का सर्वेक्षण

सतीश कुमार शर्मा
राजस्थान वन सेवा (से0नि0)
14–15, चकरी आम्बा, साकेत नगर, रामपुरा चौराहा
झाड़ोल रोड, उदयपुर–313004, राजस्थान, भारत
sksharma56@gmail.com

प्राप्त तिथि–14.08.2019, स्वीकृत तिथि–05.09.2019

सार– प्रस्तुत शोध पत्र में राजस्थान राज्य के विभिन्न जिलों में वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान पाये गये 25 विशालतम आकार वाले वृक्ष, झाड़ी एवं काष्ठ लताओं की जानकारी दी गई है। इस वानस्पतिक धरोहर को सुरक्षित व संरक्षित किया जाना चाहिए। यह विरासत परिस्थितिकीय पर्यटन को बढावा देने में सहायक सिद्ध होगी।

बीज शब्द– राजस्थान राज्य, विशाल आकार के वृक्ष, झाडिया एवं काष्ठ लताऐं, सर्वेक्षण

A survey of giant sized trees, shrubs and lianas in Rajasthan

Satish Kumar Sharma
Rajasthan Forest Service (Retd.)
14-15, Chakri Amba, Saket Nagar, Rampura Choraha
Jhadol Road, Udaipur-313004, Rajasthan, India
sksharma56@gmail.com

Abstract- In present paper detailed information about 25 giant sized trees, shrubs and lianas is given which were seen in different districts of Rajasthan during the present survey. This floral heritage should be protected and conserved. It would help enhance the eco-tourism in the state

Key words– Rajasthan state, giant sized trees, shrubs and lianas, survey

1. **परिचय–** विश्व में पक्षी अवलोकन, साँप अवलोकन, वन्यजीव छाया चित्रण, वन भ्रमण, जंगल सफारी, पर्वतारोहण, ऊँचे स्थानों पर चढ़ाई चढ़ना, आदि बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं। गत वर्षों में लोगों में वनों एवं अन्य प्राकृतिक स्थलों पर किसी प्रजाति विशेष के विशालतम् आकार या अत्यधिक आयु वाले या किसी असामान्य बनावट वाले वृक्षों को देखने की रूचि पनपने लगी है। लोग वनों में या अपने आस–पास के परिवेश में प्रजाति विशेष के बड़े से बड़े वृक्षों को ढूंढने के प्रयासों से व्यस्त देखने को मिल जाते हैं। वृक्ष अवलोकन या निहारन लोगों की प्रिय रूची बनता जा रहा है। यह उसी तरह लोकप्रिय होने लगा है जैसे देश में जगह–जगह पक्षी निहारन या अवलोकन लोकप्रिय हो रहा है। विशिष्ट वृक्षों को ढूँढ –ढूँढ कर देखने की अभिरुची को वृक्ष निहारण या वृक्ष अवलोकन कहा जाता है। भारत सरकार द्वारा 1994 से राष्ट्रीय स्तर पर महावृक्ष पुरस्कार देने का सिलसिला प्रारम्भ किया गया है। इस पुरस्कार हेतु प्रतिवर्ष भारत सरकार किन्हीं प्रजाति विशेष की घोषणा करती है तथा उन प्रजातियों के देश के सबसे विशालतम् वृक्षों की जानकारी देने वाली प्रवष्टियाँ मांगी जाती हैं। एक नियत तिथि के बाद सभी प्रविष्टियों की जाँच एक विशेषज्ञ कमेटी द्वारा की जाती है तथा प्रजाति विशेष के सबसे बडे वृक्ष की प्रविष्ट का सत्यापन होने पर उस वृक्ष को प्रजाति विशेष की श्रेणी में देश का ''महावृक्ष'' मानते हुये महावृक्ष घोषित कर दिया जाता है। भारत सरकार अभी तक सागवान, देवदार, नीम, यूकेलिप्टस, इमली, चम्पा, शीशम, अंगू, होलोंग, फलदू, बहेड़ा, आँवला, तून, सेमल, मौलसरी, महुआ, बेंखोर आदि को महावृक्ष घोषित कर चुकी है।[1]

यद्यपि राजस्थान में भारत सरकार ने किसी प्रजाति के वृक्ष को महावृक्ष घोषित नहीं किया है लेकिन जगह–जगह विशाल आकार–प्रकार के वृक्ष, झाडियाँ एवं यहाँ तक की काष्ठ लताऐं भी देखने को मिल जाती हैं। इस अध्ययन में इन्हीं विशाल प्रकार के वृक्षों, झाड़ियों व काष्ठ लताओं की जानकारी दी गई है।

2. **प्रयोगात्मक अध्ययन विधि–** वर्ष 1986 से 2018 तक 33 वर्षों तक राजस्थान के जंगलों, पड़त भूमियों, चारागाहों, आबादी क्षेत्रों, पब्लिक पार्कों, देववन या औरणों (Sacred groves) आदि में दूर–दूर तक यात्रायें की गईं। जहाँ भी बडे आकार के वृक्ष, झाड़ियाँ एवं काष्ठ

लताएं देखी गईं, उनसे संबंधित विभिन्न नाम लिये गए। वृक्षों की उँचाई, वक्ष ऊँचाई पर गोलाई या व्यास, विशेषताएं, प्रजाति पहचान, संरक्षण स्थिति एवं खतरों की जानकारी ली गई। काष्ठ लताओं एवं झाड़ियों की गोलाई भूमि के पास नापी गई। फोटोग्राफिक प्रमाण भी लिये गये। स्थानीय लोगों से भी व्यापक जन संपर्क किया गया तथा उनसे विशाल वृक्षों से संबंधित प्राप्त प्रत्येक जानकारी का मौके पर जाकर सत्यापन किया गया। भारत सरकार द्वारा महावृक्ष घोषित किये गये यूकेलिप्टस को आन्ध्रप्रदेश के चित्तूर जिले में हॉर्सली हिल पर तथा सागवान को केरल में पैराम्बीकुलम बाघ परियोजना क्षेत्र में जाकर व्यक्तिगत रूप से देखा गया। विश्व के सबसे बड़े बरगद ''थिमम्मा मर्री मानू'' को आन्ध्रप्रदेश के अनन्तपुर जिले में (कोकन्टी क्रॉस के पास) जाकर देखा गया। इससे विशालकाय आकार के वृक्षों के गुणधर्म समझने में मदद मिली। इन्हीं गुणधर्मों को ध्यान में रखकर राजस्थान राज्य की भौगोलिक सीमाओं में विभिन्न प्रजातियों के विशालतम् आकार के वृक्षों, झाड़ियों एवं काष्ठ लताओं को ढूँढने के प्रयास किये गये।

वनमिती (Forest Mensuration) की प्रचलित विधियों द्वारा विभिन्न नाप ली गई।[7] वृक्षों की ऊँचाई लेने के साथ–साथ 1.37 मी0 यानी वक्ष ऊँचाई पर व्यास या परीधि की नाप भी ली गई। एक ही प्रजाति के कई–कई विशाल वृक्षों का अवलोकन किया गया। ज्ञात सर्वाधिक बड़े मापों वाले वृक्षों के साथ–साथ अन्य बड़े वृक्षों की विभिन्न नाप भी दर्ज की गयी।

3. **परिणाम तथा विवेचना**– राजस्थान राज्य के विशालतम आकार के विभिन्न प्रजातियों के वृक्षों, झाड़ियों एवं काष्ठ लताओं की जानकारी नीचे **सारिणी–1** में प्रस्तुत की गई हैं।

सारिणी–1

राजस्थान के कुछ विशाल आकार के वृक्षों, झाडियों एवं काष्ठ लताओं के नाप सम्बंधित जानकारी

क्र0स0	स्थिति	जिला	प्रजाति	नाप संबंधित जानकारी एवं स्वभाव	सुरक्षा की स्थिति
1	नान्देशमा गाँव, तहसील गोगुन्दा	उदयपुर	पलास *(Butea monosperma)*	भूमि से निकलते ही दो शाखाओं में विभाजित जिनका वक्ष ऊँचाई घेरा क्रमशः 2.82 एवं 1.19 मीटर (वृक्ष)	सुरक्षित
2	कडेच गाँव, तहसील गोगुन्दा	उदयपुर	बरगद *(Ficus benghalensis)*	छत्रक फैलाव 50 X42 मी0^2, 27 प्रोप जडें(वृक्ष)	सुरक्षित
3	गुलाबबाग (चिड़ियाघर)	उदयपुर	महोगनी *(Swietenia mahagoni)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 2.50 मी0, ऊँचाई 12.0 मी0 (वृक्ष)	सुरक्षित
4	गुलाबबाग (बच्चों का पार्क)	उदयपुर	महोगनी *(Swietenia mahagoni)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 5 .97 मी0, ऊँचाई 15.0 मी0 (वृक्ष)	सुरक्षित
5	गुलाबबाग (बच्चों का पार्क)	उदयपुर	महोगनी *(Swietenia mahagoni)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 7 .0 मी0, ऊँचाई 15.0 मी0 (वृक्ष)	सुरक्षित
6	कुण्डेश्वर महादेव, तहसील गिर्वा	उदयपुर	बरगद *(Ficus benghalensis)*	छत्रक फैलाव 60 X60 मी0^2 (वृक्ष)	सुरक्षित
7	भेरू जी कुंज, बरावली गाँव, तहसील गोगुन्दा	उदयपुर	माल कांगणी *(Celastrus paniculata)*	भूमि तल पर घेरा 075 मी0, लंबाई 20.0 मी0(काष्ठ लता)	सुरक्षित
8	भेरू जी कुंज, बरावली गाँव, तहसील गोगुन्दा	उदयपुर	कैगर खैर *(Acacia ferruginea)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 1 .80 मी0, ऊँचाई 10.0 मी0 (वृक्ष)	सुरक्षित
9	रामेश्वरम धाम, काछबा तहसील गोगुन्दा	उदयपुर	जंगल जलेबी *(Pithocellobium dulce)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 3 .21 मी0, ऊँचाई 18.0 मी0	सुरक्षित

10	केकड़िया खोह, केकड़िया गाँव, तहसील माण्डलगढ	भीलवाड़ा	जामुन *(Syzygium cumini)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 4 .70 मी0, ऊँचाई 10.0 मी0 (वृक्ष)	सुरक्षित
11	झिर पौधशाला	झालावाड़	पीपल *(Ficus religiosa)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 6 .0 मी0, ऊँचाई 12.0 मी0 (वृक्ष)	सुरक्षित
12	इटावा गाँव, पंचायत समिती कोटड़ी	भीलवाडा	पलास *(Butea monosperma)*	सभी पत्तियाँ एक पर्णी (वृक्ष)	सुरक्षित
13	दही मता मंदिर के पास, दहीमाता गाँव, तहसील गिर्वा	उदयपुर	बहेड़ा *(Terminalia bellirica)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 6 .30 मी0, ऊँचाई 18.0 मी0, बट्रेस 18 (वृक्ष)	सुरक्षित
14	श्री शंकर महाराज का खेत, मदारिया गाँव, करेड़ा– देवगढ रोड	राजसमन्द	बबूल *(Acacia nilotica var. indica)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 3.90 मी0, ऊँचाई 12.0 मी0 (वृक्ष)	सुरक्षित
15	काँकल (क ॉकण) गाँव, तहसील झाडोल	उदयपुर	सेमल *(Bombax ceiba)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 7 .50 मी0, ऊँचाई 25.0 मी0 (वृक्ष)	आंशिक सुरक्षित
16	काँकल (कॉकण) गाँव, तहसील झाडोल	उदयपुर	गूलर *(Ficus recemosa)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 8.40 मी0, ऊँचाई 21.0 मी0 (वृक्ष)	आंशिक सुरक्षित
17	रामकुण्डा वनखण्ड, क.न. 18 तथा लादन क.न. 11	उदयपुर	हल्दू *(Adina cordifolia)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 3 .90 मी0, ऊँचाई 25.0 मी0 (वृक्ष)	सुरक्षित
18	लादन वनखण्ड में करूघाटी से पहले पगडण्डी के पास	उदयपुर	पलास *(Butea monosperma)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 4 .80 मी0, ऊँचाई 20.0 मी0 (वृक्ष)	सुरक्षित
19	दीपेश्वर महादेव प्रतापगढ़	प्रतापगढ़	कलम *(Mitragyna parvifolia)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 4 .20 मी0, ऊँचाई 15.0 मी0 (वृक्ष)	सुरक्षित
20	पानगढ पुराना किला, (बिजयपुर रेंज)	चित्तौड़गढ़	बडी गूगल *(Commiphora agalocha)*	भूमि तल पर घेरा 1.05 मी0, ऊँचाई 5.0 मी0 (झाड़ी)	सुरक्षित
21	पानगढ तालाब की पाल (बिजयपुर रेंज)	चित्तौड़गढ़	रायण *(Manilkara hexandra)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 5 .0 मी0, ऊँचाई 12.0 मी0 (वृक्ष)	सुरक्षित
22	पानगढ तालाब की पाल (बिजयपुर रेंज)	चित्तौड़गढ़	इमली *(Tamarindus indica)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 5 .60 मी0, ऊँचाई 12.0 मी0 (वृक्ष)	सुरक्षित
23	गाँव भभाण, तह . माँण्डल	भीलवाड़ा	पीलवान *(Cocculus pendulus)*	काष्ठ लता, भूमि पर घेरा 0. 95 मी0 (काष्ठ लता)	आंशिक सुरक्षित
24	गाँव देवली (माँझी)	कोटा	दखणी सहजना *(Moringa concanensis)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 3 .14 मी0, ऊँचाई 12.0 मी0 (वृक्ष)	आंशिक सुरक्षित
25	आल गुवाल एनीकट, बाघ परियोजना, सरिस्का	अलवर	गूलर *(Ficus recemosa)*	वक्ष ऊँचाई घेरा 11.67 मी0, ऊँचाई 18.0 मी0 (वृक्ष)	आंशिक सुरक्षित

उपरोक्त सारिणी में दर्ज वृक्ष, झाड़ी व काष्ठ लताएं राजस्थान के संदर्भ में ज्ञात विशाल आकार–प्रकार के विशिष्ट पौधे हैं। कडेच गाँव के बरगद का फैलाव लगभग 0.2 हैक्टेयर में है। इसी तरह कुण्डेश्वर महादेव पवित्र कुंज के बरगद का विस्तार 0.3 हैक्टेयर है जो मादड़ी गाँव में स्थित राज्य के सबसे बड़े बरगद से बेहद कम है। मादड़ी गाँव का बरगद 1.02 हैक्टेयर में फैला हुआ है।[1, 3–4] दोनों छोटे बरगदों को इसलिए शामिल किया गया है क्योंकि इनका छत्रक अच्छे आकार का है तथा ये दोनों बहुत सुन्दर भी हैं, खास कर कुण्डेश्वर महादेव क्षेत्र का बरगद बहुत ही सुन्दर एवं दर्शनीय है। इस बरगद के आस–पास का पवित्र कुंज साल भर देखने लायक रहता है तथा बडी संख्या में धार्मिक एवं परिस्थितिकीय पर्यटन करने वाले लोग यहाँ पहुँचते हैं।

रामकुण्डा मंदिर क्षेत्र मे काँकण गाँव के रास्ते आवरीमाता होकर ''हाला हल्दू'' के पास से चलते हुए करूघाटी तक जाने में रामकुण्डा एवं लादन वन खण्डों का जंगल पार करना पडता है। यहाँ पहाडों की ऊँचाई पर राजस्थान राज्य का बाँस (*Dendrocalamus strictus*) का श्रेष्ठतम् वन विद्यमान है। संभवतः इस क्षेत्र में जंगली केले (*Ensete superbum*) का घनत्व पश्चिमी घाट के वनों के समतुल्य या उससे कुछ बेहतर है। स्थल गुणवत्ता का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यहाँ 24' ऊँचाई वाला बाँस दोहन किया जाता है तथा लगभग 873 मी0 समुन्द्रतल से ऊँचाई पर भी पहाडों में हल्दू (*Adina cordifolia*) के वृक्षों की वृद्धि लगभग वैसी ही है जो की पहाडों की तलहटी में है। प्रसिद्ध लैण्ड मार्क ''हाला हल्दू'' नामक हल्दू का वृक्ष इसका उदाहरण है जो इतनी ऊँचाई का पर भी विशाल आकार ग्रहण करने में सफल रहा है।

सारिणी–1 में दर्ज वृक्ष एवं काष्ठ लताएं अपनी–अपनी प्रजाति के विशाल आकार प्रकार वाले वृक्ष हैं। ये राज्य की अद्भुत जैविक धरोहर भी हैं जिन्हें हमें जतनपूर्वक संरक्षित करना चाहिये। ये परिस्थितिकीय पर्यटन को बढावा देकर स्थानीय जनता हेतु रोजगार के नये अवसर भी स्थापित कर सकते हैं।

4. **निष्कर्ष–** विशाल आकार–प्रकार ग्रहण करने के लिए किसी भी पौधे को एक बडी आयु तक जीना पडता है। इस लेख में वर्णित पौधे बहुत बड़ी आयु तक संरक्षित रहे हैं तभी द्वितियक वृद्धि के कारण वे विशाल आकार ग्रहण कर पाये हैं। यह राज्य की एक अद्भुत जैविक विरासत है। हर वन मण्डल, रेंज एवं नाकों को अपने–अपने क्षेत्र में स्थित इन विरासत वृक्षों की कटाई, आग, व दूसरे नकारात्मक कारकों से सुरक्षा करनी चाहिये। उचित प्रचार–प्रसार द्वारा जन–जन तक इन विरासत वृक्षों, झाडियों व काष्ठ लताओं की जानकारी पहुँचाई जानी चाहिये ताकि परिस्थितिकीय पर्यटन को विस्तार दिया जा सके तथा स्थानीय लोगों को रोजगार के अधिक अवसर मिल सकें।

5. **आभार–** लेखक वन विभाग, राजस्थान के विभिन्न स्तर के कर्मचारियों व अधिकारियों का आभारी है जिन्होंने इस अध्ययन में सहयोग प्रदान किया।

सन्दर्भ

1. जैन, अनीता एवं शर्मा, एस0 के0(2016) युनिक फ्लोरल डायवर्सिटी एण्ड इट्स कल्चरल इन्ट्रीकेसी विद ट्राईबल ऑफ राजस्थान। इन (ए.के.जैन–सं.) इण्डियन एथनोबोटनीः इमरजिंग ट्रैंड्स, पृ0 113–121।
2. चतुर्वेदी, ए0 एन0 एवं खन्ना, एल0 एस0(1982) फोरेस्ट, मैनस्यूरेशन, इन्टरनेशनल बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, देहरादून।
3. शर्मा, सतीश कुमार(2018अ) वन विकास एवं परिस्थितिकीय, हिमान्शु पब्लिकेशन्स, उदयपुर एवं नई दिल्ली, मु0पृ0 1–570।
4. शर्मा, सतीश कुमार(2018ब) राजस्थान के गाँव–मादड़ी, तहसील–झाडोल, जिला–उदयपुर में स्थित राज्य के विशालतम बरगद वृक्ष का अध्ययन अनुसंधान विज्ञान शोध पत्रिका, खण्ड–6, अंक–1, मु0पृ0 18–24।